**वो वर्षा का दिन**

एक दिन आई थी वर्षा हमने उस पर की एक चर्चा।

मैंने देखा, दी ने देखा, मम्मी ने देखा, पापा ने देखा

फिर मम्मी ने गरम – गरम पकोड़ों को भी सेका।

हम सबने वे मिल - जुलकर खाए

फिर बाज़ार से अमरूद भी लाए।

टप – टप कर हुई थी वर्षा

फिर एक बड़ा बादल गरजा।

मुझे वो दिन बहुत भाया

जब मैंने वर्षा का मज़ा पाया।

कवयित्री - अवनि अग्रवाल